E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor: RJIF 5.12
IJAAS 2019; 1(1): 254-256
Received: 18-05-2019
Accepted: 23-06-2019

डॉ. संध्या गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. संध्या गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

'हिन्दी साहित्याकाश के दिनकर'

डॉ. संध्या गौतम

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्याकाश में व्याप्त रहस्यवाद और छायावाद के कुहासे को दिनकर की प्रखर रश्मियों के समान विदीर्ण करते हुए उदित होने वाले रामधारी सिंह दिनकर द्वारा अपना उपनाम 'दिनकर' रखना सर्वथा स्वाभाविक प्रतीत होता है। 'प्रकाश' नामक मासिक पत्रिका में छपी उनकी कविताओं ने उनमें पर्याप्त आत्मविश्वास भर दिया। एक दिन उनके मन में विचार आया–प्रकाश निकलता है दिनकर से और 'प्रकाश' दिनकर से और 'प्रकाश' को प्रकाश मिलता है मुझसे, तो क्यों न अपना उपनाम 'दिनकर' रख लिया जाए। बस उसी समय से रामधारी सिंह दिनकर बन गए। 'अलोक धन्वा' कविता में वे स्वतः स्वीकार करते है–

ज्योतिर्धर कवि मैं ज्वलित सौर मंडल का,
मेरा शिखंड अरुणाभ, किरीट अनल का।
रथ में प्रकाश के अश्व जुते है मेरे,
किरणों में उज्ज्वल गीत गुंथे है मेरे।

सन् 1940 में 'दिनकर' ने अन्य उपनाम अपनाया 'अमिताभ' कारण था – ब्रिटिश सरकार की नौकरी में रहकर भी राष्ट्र–प्रेमोत्तेजक कविताएँ लिखना और उन्हें प्रकाशित करवाना। रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा सम्पादित 'युवक' और 'जनता' में ये कविताएँ 'अमिताभ' के छद्म नाम से प्रकाशित होती थी। कवि ने सम्पादक महोदय को एक संकेत पत्र भी लिखा –

'यह तो दिनकर का कृत्य नहीं,
अमिताभ देव का दुष्ट कर्म।'

दिनकर के ओजस्वी व्यक्तित्त्व में जितना दिनकर का प्रखर तेज है उतनी ही आनन्ददायनी शान्ति भी। एक ओर वे ओजस्वी प्रवक्ता, उद्दाम राष्ट्रप्रेमी और अति की सीमा तक उग्र है तो दूसरी ओर उतने ही भावुक, बात–बात पर करूणार्द्र होने वाले वाक्पटु भी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी दिनकर का साहित्य विपुल और विविध रहा है। प्रमुखतः कवि होते हुए भी वे मात्र काव्य रचना तक ही सीमित नहीं रहे, उन्होंने गद्य की अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई।

साहित्य अकादमी के 'राष्ट्रीय पुरस्कार' से पुरस्कृत उनका विराट् ग्रंथ 'संस्कृति के चार अध्याय', जिसमें उन्होंने अपने शोध और अनुशीलन के आधार पर मानव सभ्यता के इतिहास का चार मंजिलों में बाँटकर अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त उनके अनेक अलोचना व निबंध–संग्रह है जैसे 'अर्द्धनारीश्वर', 'मिट्टी की ओर', 'पंत, प्रसाद और निराला', राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता आदि, जो पठनीय है, विशेषतः इस कारण क्योंकि उनसे दिनकर के कवित्व को समझने–परखने में विशेष सहायता मिलती है। 'बाल साहित्य' लिखकर वे बच्चों के प्रिय और प्रेरक रहे।

दिनकर का कवि रूप अत्यंत भास्वरता के साथ क्रमशः प्रकाश में आता गया – रेणुका, हुंकार, रसवंती, द्वन्द्वगीत, सामधेनी, बापू, इतिहास के आँसू, धूप और धुआँ, दिल्ली, नीम के पत्ते, नए सुभाषित, परशुराम की प्रतीक्षा, रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र, उर्वशी आदि इसका प्रमाण है। 'द्विवेदी पदक' इन्हें दो बार मिला। राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किया गया तथा 'उर्वशी' पर उन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' मिला।

रामधारी सिंह दिनकर वास्तव में राष्ट्रीय भावनाओं के ओजस्वी गायक है। वे उन कवियों में अग्रगण्य है, जिन्होंने हिन्दी कविता को छायावाद की कुहेलिका से बाहर निकालकर उसमें जीवन का तेज भरा और उसे राष्ट्र और समाज की ज्वलंत समस्याओं से जूझना सिखाया। हिन्दी की राष्ट्रीय कविता ने अभी तक तो तीन मंजिले पार की है, दिनकर उनमें तीसरी मंजिल के प्रतिनिधि कवि है। पहली मंजिल की राष्ट्रीयता एक दर्द भरी पुकार थी, जिसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने वाणी दी। दूसरी मंजिल की राष्ट्रीयता में वर्तमान की विवशता के साथ अतीत का गौरव स्मरण था, जिसके पुरोधा मैथिलीशरण गुप्त थे।

तीसरी मंजिल की राष्ट्रीयता अत्याचार, अन्याय, राजदासता सामाजिक जड़ता के विरुद्ध विद्रोह का तूर्यनाद थी, जो दिनकर के काव्य में व्यक्त हुई है। कवि ने स्वयं कहा है कि मैं समय का पुत्र हूँ और मेरा सबसे बड़ा कार्य है कि मैं अपने युग के क्रोध, अधीरता और बेचैनियों को सबलता के साथ बाँधकर छंदों में उपस्थित कर दूं। इसी कारण दिनकर ने अपने काव्य में तत्कालीन आक्रोश, क्षोभ, खीझ, अन्याय एवं अत्याचार को स्वर प्रदान किया है – 'रेणुका', 'हुंकार', 'सामधेनी' आदि में उनका यही रूप व्यक्त हुआ है। वे 'हिमालय' कविता में देश के नवयुवकों को गुलामी की जंजीरों को तोड़ फैंकने के लिए ललकारते है –

मेरे नगपति, मेरे विशाल,
ले अगड़ाई उठ, हिले धरा, कर निज विराट् स्वर में निनाद,

ब्रिटिश सम्राज्यशाही का अन्त हुआ तो चीनी आक्रमण के समय पुनः युवकों का पौरुष जगाने के लिए वे कहते है –

पर्वतपति को आमूल डोलना होगा।
शंकर को ध्वंसक नयन खोलना होगा।

दिनकर से पहले भी बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'उथल–पुथल' मचाने की तान छेड़ी थी, लेकिन उसका आवेश दर्द की तरह उठा और आँसू की तरह गिरकर रह गया। 'भारत–भारती' में भी भारत के नौजवानों को देश की परतन्त्रता दूर करने का सूखा उपदेश दिया गया था। लेकिन दिनकर के काव्य में ऐसी क्रान्ति की पुकार है जो सूखे शरीर में भी रक्त का उबाल पैदा कर देती है –

कह दे शंकर से आज करें
वे प्रलय–नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूंज उठे,
हर–हर बम का महोच्चार।

जो जाति अपना उत्साह खो देती है और निराश होने के कारण आगे उन्नति नहीं कर पाती। दिनकर उस जाति में भी नवीन उत्साह, आशा तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा भर देते है। 'अलोक धन्वा' में वे कहते है –

जड़ को उड़ने की पाँख दिए देता हूँ,
चेतन के मन को आँख दिए देता हूँ।
म्रियमाण जाति को प्राण दिया करता हूँ,
पीयूष प्रभामय गान दिया करता हूँ।

दिनकर की ऐतिहासिक चेतना अत्यंत प्रखर है, अतीत से वर्तमान का वैषम्य दिखाकर वर्तमान की पीड़ा को वाणी देने में उनका कोई जोड़ नहीं है। वे इतिहास की गति को आगे की ओर से मोड़कर पीछे की ओर नहीं करना चाहते थे। उनकी ऐतिहासिक चेतना का सबसे बड़ा प्रमाण उनकी रचना 'संस्कृति के चार अध्याय' है। जिसमें उन्होंने संस्कृतियों के संगम में भारतीय प्रतिभा के सफल विकास का चित्रण किया है।
'कुरुक्षेत्र' महाकाव्य में दिनकर ने जहां युद्ध को मानवता के लिए अभिशाप बताया है, वही अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध युद्ध को धर्मयुद्ध की संज्ञा दी है। उनका मत है कि जब शत्रु द्वार पर ललकारता है, तो उसे जूझना ही पड़ता है, उस समय धर्म–नीति आदि की बातें व्यर्थ है –

छीनता हो स्वत्व कोई और तू,
त्याग तप से कम ले यह पाप है।
पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे,
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ हो।

विश्व में जब तक द्वेष और स्वार्थ है, तब तक युद्ध अनिवार्य है, और जो अनिवार्य है उसके लिए परिताप करना व्यर्थ है। जीवन में कर्म और संघर्ष को महत्व देता कवि कहता है कि इस हास–अश्रुमय जीवन को स्वीकार करके जीने वाला आशावादी मिट्टी का पुतला ही कल का इतिहास बनाएगा–

फूलों पर आँसू के मोती,
और अश्रु में आशा।
मिट्टी के जीवन की छोटी,
नपी–तुली परिभाषा।

दिनकर आरम्भ से ही यथार्थप्रिय कवि है। समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता के प्रति वे अपना आक्रोश व्यक्त करते है। तत्कालीन भारत का शोषक और शोषित रूप इनके काव्य द्वारा बड़े प्रभावशाली रूप में मुखर हुआ है –

श्वानों को मिलता वस्त्र दूध, भूखे बालक अकुलाते हैं।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर, जाड़े की रात बिताते हैं।
युवती की लज्जा वसन बेच जब ब्यान चुकाये जाते हैं।
मालिक जब तेल फुललों पर पानी सा द्रव्य बहाते हैं।
पापी महलों का अहंकार, देता मुझको तब आमंत्रण।

दिनकर ने अपने काव्य में तत्कालीन समाज की उस परम्परागत दूषित मनोवृति को भी चित्रित किया है, जिसके फलस्वरूप उच्च कुल गोत्र के अहंकार में लीन उच्च वर्ण के लोग निम्न जाति के दीन–हीन व्यक्तियों को समाज में उन्नति नहीं करने देते, समाज में प्रतिष्ठा नहीं देते। 'रश्मिरथी' काव्य में निम्न जाति के आदर्श व्यक्ति का प्रतीक कर्ण ने कहा है –

कुल–गोत्र नहीं साधन मेरा,
पुरुषार्थ एक बस धन मेरा।

कहकर पुरुषार्थ को ही मानव उन्नति का आधार माना है। 'परशुराम की प्रतीक्षा' में भी दिनकर ने कहा है –
जिस पापी को गुण नहीं गोत्र प्यारा है,
समझो उसने ही हमें यहां मारा है।

इस प्रकार कवि ने जाति–पाति, कुल–गोत्र को भारतीय समाज के पतन का कारण माना है। कर्ण के द्वारा दिनकर ने निम्न वर्ण एवं जाति के लोगों को प्रेरणा दी है कि वे अपने बल–पौरुष द्वारा समाज में प्रतिष्ठा के अधिकारी बन सकते है। तत्कालीन समाज नाना प्रकार की कुरीतियों, रूढ़ियों, परम्पराओं एवं अंधविश्वासों में लीन होकर पतन की ओर उन्मुख हो रहा था। परम्परा की होलियां जला रही जवानियां' कहकर कवि ने परम्पराओं के विध्वंस को शुभ माना है, जिनमें फंस कर भारतीय समाज जर्जर होता जा रहा था। परन्तु कवि परम्परा को पूर्णतया समाप्त करना अच्छा नहीं समझता। 'परम्परा' कविता के अन्तर्गत दिनकर ने कहा है –

'परम्परा को अंधी लाठी से मत पीटो,
उसमें बहुत कुछ है, जो जीवित है
जीवनदायक है,

जैसी भी हो, ध्वंस से बचा रखने के लायक है।1 परम्परा चीनी नही, मधु है कह कर परम्परा की प्रशंसा भी की है।
दिनकर सदैव युगानुरुप विविध और नए विषयों को ग्रहण करते

रहे है, इसीलिए उनका विषय–विस्तार अनन्त है। 'उर्वशी' का वर्ण्य विषय प्रागैतिहासिक, 'कुरुक्षेत्र' का पौराणिक, 'परशुराम की प्रतीक्षा' का रामायणकालीन है तो 'बापू', 'दिल्ली', 'नए सुभाषित' का समकालीन और परिस्थितियों के अनुकूल है। इतना ही नहीं राजा से लेकर प्रजा तक, धनी से लेकर निर्धन तक, राष्ट्रीयता से लेकर अन्तर्राष्ट्रीयता तक और चिन्तन से लेकर बाल मनोरंजन तक न जाने कितने विषय इनके काव्य–कृतिव में भरपूर मात्रा में उपलब्ध होते है। दिनकर की काव्य–कला एक और अपने पूर्ववर्ती काव्य–जगत का प्रतिनिधित्व करती है, तो दूसरी ओर अपने समकालीन युगानुरूप काव्य–कला रूपों से युक्त है, इससे भी बढ़कर उसमें अपनी मौलिकता है। सच तो यह है कि दिनकर की भांति इनकी काव्य–कला भी यथा नाम तथा गुण को चरितार्थ करती है, क्योंकि उसमें दिनकर का तेज भी और ओज भी, व्यापकता भी है और प्रकाशन शक्ति भी, साथ ही साथ वह रंग–बिरंगी और चित्ताकर्षक भी है।

अतः समग्र साहित्य अनुशीलन से यह तथ्य उजागर होता है कि हिन्दी साहित्यकाश के दिनकर रामधारी सिंह दिनकर है, जिसके प्रकाश से मानव जाति प्रकाशित होती आ रही है और भविष्य में भी प्रकाशित होती रहेंगी।

संदर्भ

1. रश्मि रथी, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज
2. कुरुक्षेत्र, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली।
3. संस्कृति के चार अध्याय
4. गूगल, कविता कोश